Balram Lodhi - 02-08-2020

97

कौटिल्य एकेडमी

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

1 A

मलखंभ
→ म.प्र. का राजकीय खेल है
→ इसमें जिमनास्टिक एक काष्ठ स्तंभ या रस्सी के सहारे कला प्रदर्शन
→ चालुक्य ग्रंथ 'मानस सोल्हास' में उल्लेख (1135 ई.)
→ बालमभट्ट दादा देवधर का विशेष योगदान

1 B

जिले (7)
→ सीधी
→ सिंगरौली
→ अनूपपुर
→ शहडोल
→ मंडला
→ डिंडोरी
→ बालाघाट

1 C

1 D

ST सीट (6)
→ शहडोल
→ मंडला
→ बैतूल
→ धार
→ रतलाम - झाबुआ
→ खरगौन

भारत का न. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

1 E

- सुशासन एवं नीति विश्लेषण स्कूल की स्थापना २००७ में की गयी जिसे आगे चलकर 'अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन एवं नीति विश्लेषण संस्थान' में विलय कर दिया गया।
- स्थान → भोपाल स्थित
- उद्देश्य → सरकार की नीतियों का मूल्यांकन करके उन्हें अधिक प्रभावशाली व जनोन्मुखी बनाना। विभागों के लिए नीति निर्माण करना और वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप कल्याणकारी शासन (सुशासन) सुनिश्चित करना।

1 F

चिलपी श्रेणी →

- सतपुड़ा की मैकाल श्रेणियों में स्थित (म.प्र. व छत्तीसगढ़)
- मिनी कश्मीर या छत्तीसगढ़ का कश्मीर
- साल वन की अधिकता
- बैगा जनजाति की बहुलता

1 G

माही नदी
- → खम्भात की खाड़ी में अपसान
- → धार जिले के सरदारपुर से उद्गम (विंध्याचल पर्वत श्रेणी)
- → धार शहर (किनारे)

Scanned with CamScanner

H

- म.प्र. के चंबल में स्थित
- घड़ियाल, मगरमच्छ, कछुआ, ऊदबिलाव के लिए प्रसिद्ध
- सम्बंधित नदी → चंबल

(1)

I

महावीर अहिंसा पुरस्कार
- → महावीर के सिद्धान्त, शाकाहार, अहिंसा के क्षेत्र में प्रमुख योगदान के लिए दिये जाने वाला पुरस्कार
- → राशि – 2 लाख रुपये

(2)

K

ओला गीत
- → बुंदेलखंड (म.प्र.) क्षेत्र का लोक गायन
- → अन्य नाम – बम्बुलिया, लमटेरा
- → शिवभक्ति से सम्बंधित
- → श्रावण मास में प्रमुखतः गायन
- → स्त्री-पुरुष दोनों

(2)

M

- म.प्र. व महाराष्ट्र की संयुक्त परियोजना
- बाघ नदी पर निर्मित
- लाभान्वित क्षेत्र – म.प्र. व महाराष्ट्र के सीमा क्षेत्र

(2)

Scanned with CamScanner

1 M

ठक्कर बापा → 'आदिवासी' शब्द जनजातियों के लिए
→ ठक्कर बापा पुरस्कार म.प्र.
→ सरकार द्वारा जनजातियों के लिए उल्लेखनीय कार्य करने पर प्रदान किया जाता है।

1 L

- मध्यप्रदेश के मंडला जिले में स्थित रामगढ़ की रानी (विक्रमाजीत सिंह की पत्नी)
- 1857 की प्रमुख सेनानी
- हड़प नीति का विरोध करते हुये शौर्य व पराक्रम प्रदर्शन करते हुए वीरगति प्राप्त की।

1 O

- निमाड़ अंचल का प्रमुख पारंपरिक आनुष्ठानिक नृत्य
- गणगौर त्योहार के अवसर पर चैत्र मास में
- पार्वती देवी की उपासना
- 'झोला' व 'झलरिया' शैली

Scanned with CamScanner

पृष्ठ संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी

A

छत्रसाल
'राजा'
↓
स्वतंत्र शासक

- → बुंदेला शासक
- → पिता → चंपतराय
- → स्वतंत्र ~~प्रथम स्वागत~~ बुंदेला राज्य की स्थापना
- → मुगलों से संघर्ष
- → 1676 में पन्ना को जीतकर राजधानी बनाया
- → बाद में ओरछा को राजधानी बनाया
- → औरंगजेब से संधि कर स्वतंत्र 'राजा' की उपाधि प्राप्त की।

(2) वर्णनात्मक उत्तर लिखिए

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

2 B

म.प्र. की प्रमुख भाषा हिंदी है, किंतु यहाँ विभिन्न क्षेत्रों में अनेक बोलियाँ बोली जाती हैं जिनमें प्रमुख निम्नलिखित हैं:

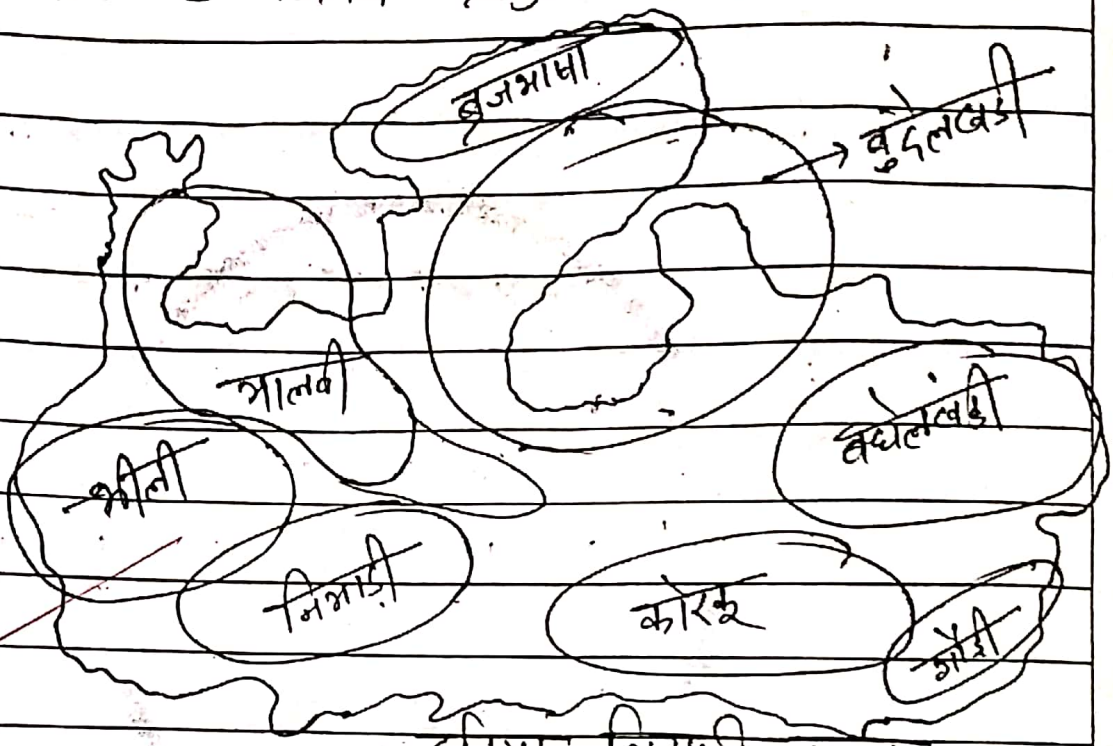

(1) बुंदेलखंडी → दतिया, शिवपुरी, गुना, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, सागर, दमोह आदि

(2) निमाड़ी → खरगौन, खंडवा, धार, देवास, झाबुआ आदि

(3) बघेलखंडी → रीवा, सतना, सीधी, सहडोल, उमरिया

(4) मालवी → सीहोर, नीमच, इंदौर, देवास, उज्जैन, शाजापुर आदि

(5) कोरकू → बैतूल, होशंगाबाद, छिंदवाड़ा

Scanned with CamScanner

C

म.प्र. का बुंदेलखंड क्षेत्र सांस्कृतिक रूप से सर्वाधिक सम्पन्न क्षेत्र है जिसमें अनेक प्रकार के लोक नृत्य, गायन एवं अन्य कला शैलियाँ शामिल हैं।

लोककलाओं की इस समृद्ध विरासत में बुंदेलखंड के लोकनृत्य महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं जो निम्नलिखित हैं:

① राई नृत्य → म.प्र. का राजकीय नृत्य
→ विवाह, होली, जन्मोत्सव आदि अवसरों पर
→ वाद्ययंत्र – मृदंग, टिमकी, ढोलक, दफली आदि
→ शृंगार प्रधानता

② सैरा → फसल कटाई के अवसर पर
→ पुरुष प्रधान
→ वाद्ययंत्र – ढोलक, नगड़िया, मंजीरा आदि

③ कानड़ा → धोबी जाति द्वारा विवाह, जन्मोत्सव आदि पर
→ गुरु वंदना → गजानन भगवान की कथा
→ ढोलक, लोटा, सारंगी आदि

④ बधाई → विवाह, तीज त्यौहार, जन्मोत्सव पर
→ स्त्री-पुरुष दोनों शामिल
→ दफली, टिमकी, बाँसुरी – वाद्ययंत्र

Scanned with CamScanner

प्रश्न संख्या

⑥ भीली → रतलाम, झाबुआ, अलीराजपुर, खरगौन आदि

⑦ गोंडी → छिंदवाड़ा, सिवनी, बालाघाट, मंडला, डिंडोरी आदि

Scanned with CamScanner

1) म.प्र. आदिम मनुष्य की कर्मभूमि रहा है, जिसे म.प्र. में स्थित विभिन्न प्राचीन शैलाश्रय और गुफायें प्रमाणित करते हैं। मध्यप्रदेश की प्रमुख गुफाऐं निम्नलिखित हैं:

(1) भीमबैठिका की गुफायें
→ प्राचीनतम गुफायें जो पुरापाषाणसंस्कृति का उदाहरण हैं।
→ रायसेन (म.प्र.) में स्थित
→ उत्खनन – वाकणकर द्वारा
→ यूनेस्को विश्व विरासत सूची में शामिल
↓
लौकिक चित्रण

(2) आदमगढ़ की गुफायें
→ होशंगाबाद में स्थित
→ शैलकृत चित्रित गुफायें
→ लौकिक जीवन का चित्रण जैसे – शिकार मानव युद्ध इत्यादि।

(3) उदयगिरि की गुफाऐं
→ विदिशा जिले में स्थित
→ गुप्तकालीन ~~बौद्ध~~
→ जैनधर्म व हिंदू धर्म सम्बंधी (गुफा नं. – 5 वराह अवतार)

(4) भर्तृहरि की गुफाए
→ उज्जैन में स्थित
→ 11वी शताब्दी में निर्मित
→ रंगीन चित्र

अन्य → बाघ गुफाएँ (धार), पांडव (पचमढ़ी)

5

2 E

कोरकू शब्द का अर्थ होता है - 'मनुष्यों का समूह'। 'कोरकू' कोल जनजाति की ही एक शाखा है जिसकी प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

- भौगोलिक क्षेत्र – बैतूल, छिंदवाड़ा, खंडवा, बुरहानपुर आदि
- सामाजिक संरचना – ये पितृसत्तात्मक ~~समाज~~ है जो सामाजिक संगठन में हिंदुओं से प्रभावित है।
- पहनावा – पुरुष धोती और सिर पर अंगोछा। महिलाएं - घाघरा चोली और साड़ी पहनती हैं।
- विवाह – लमसेना, प्रेमविवाह, हठविवाह, तलाक विवाह, विधवा विवाह आदि
- पर्व-त्यौहार – ये प्रायः हिंदू धर्म के त्यौहार मनाते हैं, जैसे - दीपावली, होली, माघ दशहरा आदि
- धार्मिक चरित्र – ये हिंदू धर्म से प्रभावित हैं। अतः चंद्रमा, महादेव, मेघनाथ आदि की पूजा करते हैं। तंत्र-मंत्र पर विश्वास + मृतकों को दफनाते
- आर्थिक – प्रमुख व्यवसाय - कृषि, आखेट, पशुपालन, वनोपज आदि है।

4

Scanned with CamScanner

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

खनिज संसाधन की दृष्टि से धनी राज्य म.प्र. मैंगनीज अयस्क के उत्पादन की दृष्टि से देश में प्रथम स्थान प्राप्त पर हो गया है (आर्थिक सर्वेक्षण 2018-19 के अनुसार)।

म.प्र. में मैंगनीज का भंडार मुख्यतः बालाघाट एवं छिंदवाड़ा जिलों में है। यह देश का लगभग 50% मैंगनीज पाया जाता है।

म.प्र. में प्रमुख मैंगनीज क्षेत्र

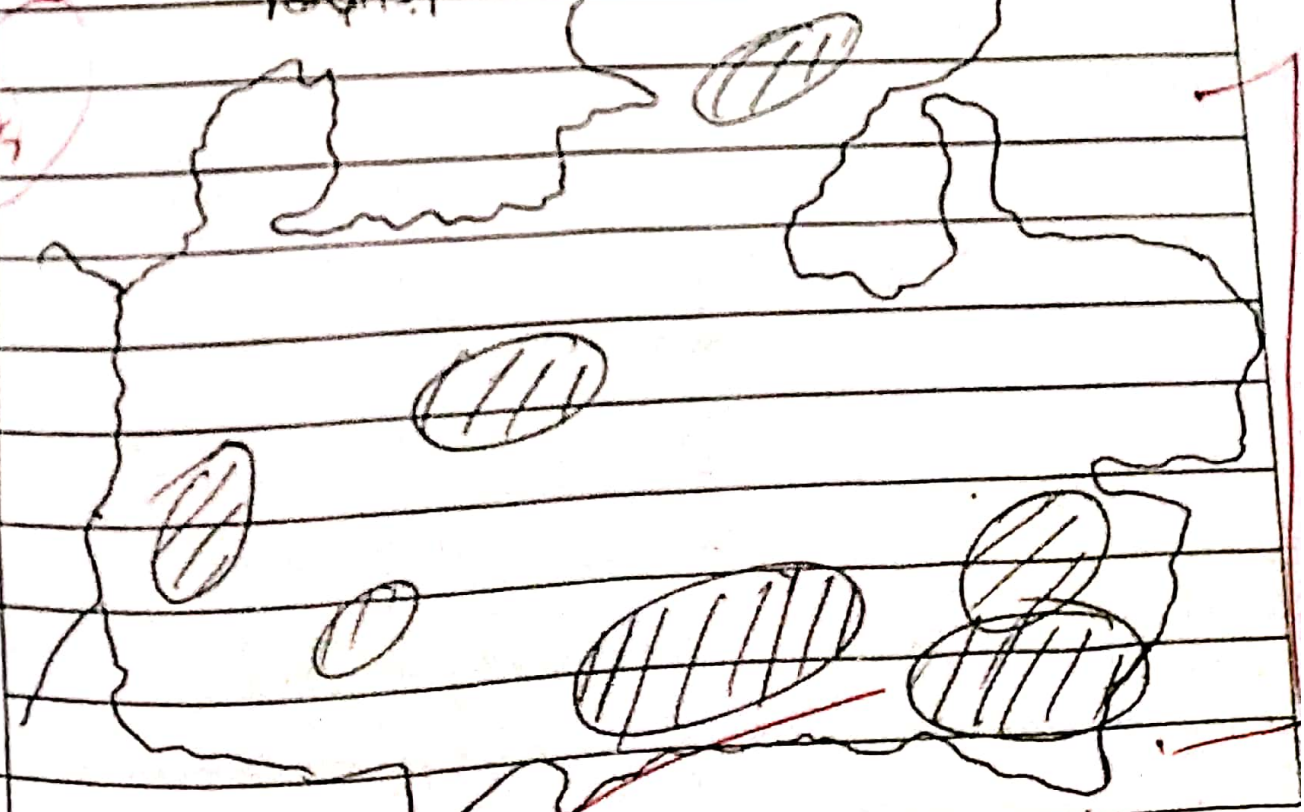

- बालाघाट
- छिंदवाड़ा
- इंदौर
- झाबुआ
- ग्वालियर
- मंडला

संकेत (मैंगनीज)

2 (G)

म.प्र. का लगभग 27% भाग नर्मदा सोन - घाटी के अंतर्गत आता है, जो मध्य उच्चप्रदेश में स्थित भौगोलिक क्षेत्र है। उत्तरपूर्व से पश्चिम तक विस्तृत इस क्षेत्र का आर्थिक महत्व निम्नलिखित बिंदुओं के अंतर्गत समझा जा सकता है।

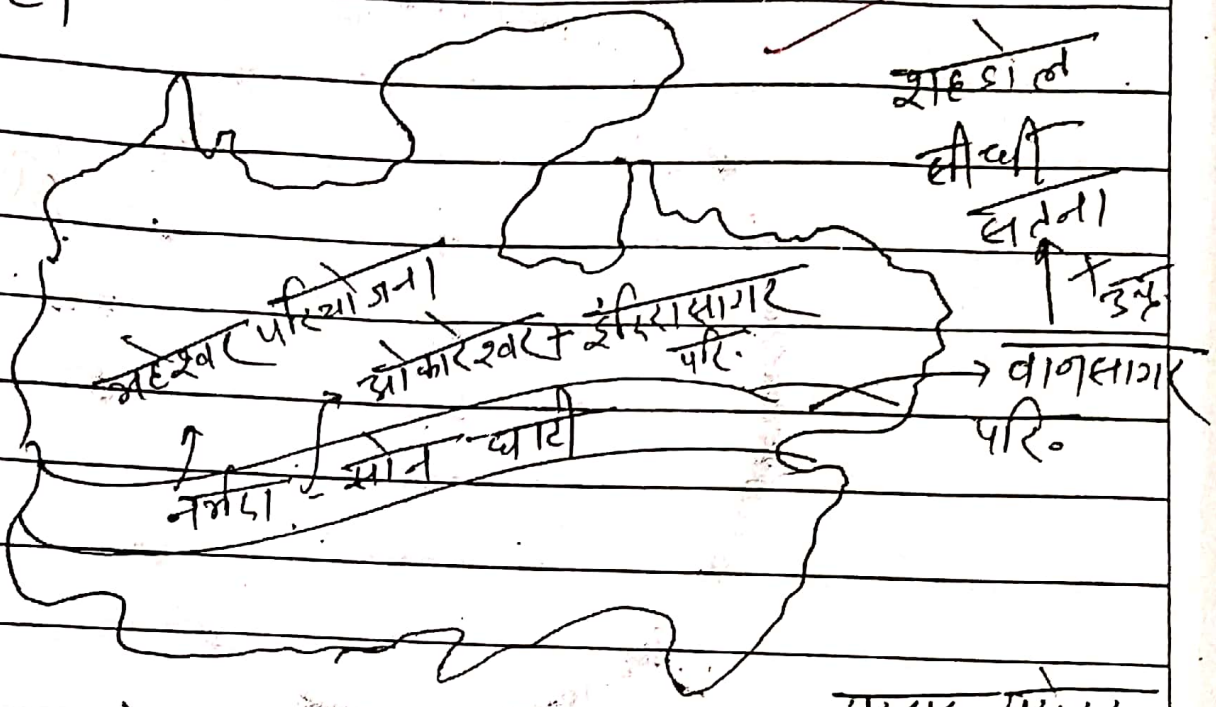

सिंचाई क्षेत्र में
→ नर्मदा से 27.55 लाख हेक्टेयर भूमि सिंचित (म.प्र., महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान) → सरदार सरोवर परि.
→ इंदिरासागर
→ ओंकारेश्वर
→ महेश्वर परियोजना
→ सोन से 1.53 लाख हेक्टेयर (सिंचाई) → बाणसागर परियोजना

जल विद्युत
→ नर्मदा → 3000 मेगावाट
→ सोन → 400 मेगावाट
→ म.प्र. + उ.प्र.

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का पर्याय बना..

पर्यटन → नर्मदा - सोन घाटी में विभिन्न प्रकार के पर्यटन स्थल स्थित हैं जो भविष्य की आर्थिक सम्भावनाओं के साथ वर्तमान में भी आर्थिक महत्व रखते हैं

जैसे - धुआंधार जलप्रपात
- भेड़ाघाट जलप्रपात
- ओंकारेश्वर, महेश्वर
- सरदारसरोवर बाँध पर स्थित 'स्टेच्यू ऑफ यूनिटी'

इत्यादि

1/2

Scanned with CamScanner

5

8 अगस्त 1942 को बम्बई में 'अखिल भारतीय कांग्रेस समिति' ने ऐतिहासिक आंदोलन 'भारत छोड़ो' का प्रस्ताव पारित किया, जिसके बाद सम्पूर्ण भारत में सभाएँ, सत्याग्रह और संघर्ष हुए। इसमें म.प्र. के हर जिले, कस्बे, ग्राम ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

→ पंडित रविशंकर शुक्ल, द्वारकाप्रसाद मिश्र सहित अनेक देशभक्तों ने संघर्ष का सूत्रपात किया।

→ मंडला, सागर, होशंगाबाद, जबलपुर, नरसिंहपुर आदि जगहों पर अभिलेखों (शासकीय) को नष्ट किया गया।

→ 9 अगस्त को तिलक भूमि तलैया (जबलपुर) में सभा हुयी। 14 अगस्त के फुहारे जुलूस में युवक गुलाबसिंह शहीद हुआ।

→ रीवा में विद्यार्थी यूनियन द्वारा जुलूस निकाला गया, जिसमें लाल पद्मधर सिंह झंडा पकड़े शहीद हुये।

→ बैतूल जिले के घोड़ाडोंगरी क्षेत्र में आदिवासियों द्वारा विष्णु गोंड़ के नेतृत्व में आंदोलन हुआ।

→ चीचली ग्राम में 23 अगस्त को हुयी सभा में करो या मरो के नारे

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

को उद्वेलित कर जनता को प्रेरित किया गया; जिसमें पुलिस से हुयी झड़प में मंशाराम और गौराबाई शहीद हो गये।

→ इंदौर में सराफा सत्याग्रह किया गया। प्रजामण्डल ने समर्थन किया। वहीं रतलाम, धार, झाबुआ आदि स्थानों पर प्रदर्शन हुये।

→ ग्वालियर रियासत में 'सार्वजनिक सभा' ने इस आंदोलन का समर्थन करते हुये विदिशा में उत्तरदायी शासन की मांग रखी।

→ रीवा विंध्यक्षेत्र में चावल आंदोलन के द्वारा भारत छोड़ो आंदोलन का समर्थन किया गया।

→ भोपाल में शाकिरअली खाँ के नेतृत्व में आंदोलन हुआ।

इस तरह म.प्र. के हर क्षेत्र में आंदोलन हुआ जिसमें जनता की महत्वपूर्ण भागीदारी रही जो हमेशा म.प्र. की जनता और इतिहास के लिए गौरवान्वित करेगी।

5½

Scanned with CamScanner

2 I

राष्ट्रीय भावना का अंकन करने वाली कवयत्री सुभद्रा कुमारी चौहान न केवल हिंदी साहित्यकारों में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं, बल्कि स्वाधीनता आंदोलन में खुलकर भाग लेने के कारण भी स्मरणीय हैं।

उनकी प्रसिद्ध रचना 'झांसी की रानी' ने जनता में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत की जैसे –

"बुन्देलों हरबोलों के मुँह हमने सुनी
कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी
वाली रानी थी।"

जीवन परिचय
→ जन्म : 1904 में प्रयागराज (उ.प्र.)
→ पिता : ठाकुर रामनाथ सिंह
→ माखनलाल चतुर्वेदी के साथ 'कर्मवीर' का सम्पादन
→ मृत्यु : 1948 में

रचनाएँ
→ कविता – 'बचपन', 'सभा का खेल'
→ कहानी – 'सीधे-सादे चित्र'
→ अन्य – 'बिखरे मोती', 'उन्मादिनी' 'मुकुल'

भाषाशैली → साहित्यिक खड़ी बोली

4½

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या 2

लोक जीवन में घरों की दीवारों या भूमि पर उकेरी जाने वाली चित्रकला भित्ति चित्रकला कहलाती है।

म.प्र. में प्रागैतिहासिक काल से लेकर आज तक मानव के सामाजिक एवं नैसर्गिक जीवन को प्रदर्शित करने वाली चित्रकला दृष्टिगोचर होती है जैसे भीमबैठिका की गुफाएं। मध्यप्रदेश के विभिन्न अंचलों में भिन्न-भिन्न व विशेष भित्ति चित्रकला प्रचलित है जैसे-

- निमाड़
  - गोवर्धन
  - सातियाँ
  - भिरोती
  - मांडना
- मालवा
  - चित्रावण
  - ओर
  - हरतालिका
- बुन्देलखंड
  - चौक
  - गोवर्धन
  - सुरेती
- बघेली
  - मोहबर
  - तिलंगा

विशेषताएँ
- प्राकृतिक रंगों का प्रयोग
- भूमि या दीवार पर
- परंपरागत त्यौहारों या पूजा पर
- पीढ़ी सन्चारित
- प्रागैतिहासिक काल से लेकर अब तक
- विविधता
- सौंदर्यबोध का प्रतीक

2 K

दलहन फसलों के अंतर्गत मुख्यतः चना, ~~अरह~~ तुअर, उड़द, मूँग, मटर आदि आते हैं जिसमें से म.प्र. में प्रमुख रूप से चना, अरहर (तुअर) और उड़द महत्वपूर्ण हैं।

म.प्र. में आर्थिक समीक्षा 2018-19 के अनुसार कुल दलहन का उत्पादन 8731 हजार मीट्रिक टन हुआ जिसमें प्रमुख भाग चना और अरहर का है।

चना —
- → रबी फसल
- → भारत में म.प्र. का उत्पादन में प्रथम स्थान
- → 2017-18 में उत्पादन 5385 ~~मीट्रिक~~ हजार मीट्रिक टन (आर्थिक समीक्षा 2018-19)
- → उज्जैन, देवास, विदिशा, इंदौर आदि जिलों में उत्पादन अधिक

अरहर —
- → खरीफ फसल
- → दूसरा स्थान (भारत में)
- → 2017-18 में 839 हजार मीट्रिक टन उत्पादन
- → भिंड, मुरैना, छिंदवाड़ा में उत्पादन

अन्य → उड़द, मूंग, मटर

(4)

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का ... संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार..

२०११ की जनगणना के अनुसार म.प्र. की ग्रामीण जनसंख्या

(A) जनसंख्या → 5.25 करोड़ (72 प्रतिशत) (म.प्र. की कुल जनसंख्या का)
- न्यूनतम → भोपाल
- सर्वाधिक ग्रामीण → डिंडोरी
- 1.25% लोगों का गाँवों से शहरीकरण

(2) लिंगानुपात
- म.प्र. – 931
- ग्रामीण – 936

(3) जनसंख्या वृद्धि → 2001 से 2011 के बीच
- प्रदेश की (कुल) → 20%
- ग्रामीण → 18.%

(4) साक्षरता →
- प्रदेश की कुल = 69.3%
- ग्रामीण → 64%
  - पुरुष → 75%
  - महिला → 52%

(5) कार्यशील जनसंख्या
- म.प्र. की कुल = 43.57
- सर्वाधिक कृषि में संलग्न → 69.8%

इस प्रकार म.प्र. दलहन उत्पादन में अग्रणी राज्य है जो न केवल भारत में दालों की आवश्यकता पूरी करता है, साथ ही राज्य की अर्थव्यवस्था को भी मजबूत करता है। जिससे GSDP में कृषि का योगदान बढ़ता है।

4½

A

देश का हृदय कहा जाने वाला मध्यप्रदेश केवल देश के मध्य में स्थित होने के कारण ही हृदय के समान महत्व नहीं रखता बल्कि ऐतिहासिक प्राचीनता और सांस्कृतिक विविधता के कारण भी हृदयसम संज्ञा प्राप्त करता है, जिसका प्रमाण यहाँ के पुरातात्विक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थल व स्मारक हैं।

यहाँ प्रागैतिहासिक समय से लेकर आधुनिक काल के स्मारक, मंदिर, गुफाएँ, स्तूप मकबरे, दुर्ग आदि देखने को मिलते हैं; जो निम्नलिखित हैं:

#. गुफाएं

① भीमबैठिका की गुफाएँ
- → विश्वविरासत स्थल
- → प्रागैतिहासिक संस्कृति
- → रायसेन में स्थित
- → चित्रित

② उदयगिरि
- → विदिशा जिले में
- → जैन व हिंदू स्मारक
- → गुफा नं. - 05 → वराह
- → गुप्तकालीन अवतार

③ आदमगढ़ की गुफाएं
- → होशंगाबाद जिले में
- → शैलकृत चित्रित
- → प्राकृतिक चित्र दृश्य

अन्य →
- → भर्तृहरि → उज्जैन
- बाघ की गुफाएँ → धार
- → मृगेंद्रनाथ → रायसेन

ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थल

(1) खजुराहो →
- छतरपुर जिले में स्थित
- निर्माण – चंदेल शासकों ने
  - राजा धंग का महत्वपूर्ण योगदान
- तोरण द्वार → खजूर वाहक
- दर्शनीय स्थल →
  - मंदिर →
    - पश्चिमी समूह
      - कंदरिया महादेव
      - चौंसठ योगिनी
    - पूर्वी समूह
      - पार्श्वनाथ मंदिर
      - आदिनाथ मंदिर (जैन धर्म)
    - दक्षिणी समूह
      - चतुर्भुज मंदिर
      - दूल्हादेव मंदिर
  - अन्य
    - बेनीसागर बाँध
    - रनेह प्रपात
- जैन, शैव व वैष्णव धर्म → धार्मिक सहिष्णुता व सौहार्द्र का प्रतीक
- यूनेस्को – विश्व विरासत सूची

(2) ग्वालियर
- गालव ऋषि के नाम पर
- दर्शनीय स्थल
  - ग्वालियर का किला
    - निर्माण → सूरजसेन ने
    - 8 वीं सदी में

P.T.O.

Scanned with CamScanner

प्रश्न संख्या

→ पूर्व का ~~म्रि~~ जिब्राल्टर
→ किलों का रत्न
→ बलुआ पत्थर से बना
→ 5 दरवाजे
→ आलमगीर दरवाजा
→ चतुर्भुज दरवाजा
हाथीपोड़ ←
गूजरीमहल दरवाजा ←
→ हिंडोला दरवाजा

इमारतें
→ बादल महल
→ चतुर्भुज मंदिर
→ गूजरी महल (राजा मानसिंह तोमर द्वारा)
मानमंदिर ←
सासबहू मंदिर
तेली का मंदिर → द्रविड़ शैली में बना
→ बंदी छोड़ ~~दरवाजा~~ ~~गुरुद्वारा~~ गुरुद्वारा

अन्य → जयविलास महल
→ लक्ष्मीबाई समाधि

③ मांडू
→ धार
→ सिटी ऑफ जॉय
→ ~~निर्माण~~ रानी रूपमती और बाजबहादुर सम्बंधी
→ परमार शासकों की राजधानी रहा

↳ दर्शनीय स्थल → रूपमती महल
→ अशर्फी महल
→ हिंडोला महल
→ लोहानी गुफाएँ आदि

(4) साँची → रायसेन जिले में
→ स्तूप (सबसे बड़ा)
→ अशोक द्वारा निर्मित
→ जातक कथाएँ
→ अन्य लघु स्तूप व मंदिर

↓ विश्व धरोहर
↓ बौद्ध धर्म सम्बंधी

(5) भरहुत → बौद्ध स्थल
→ स्तूप
→ सतना

(6) ओरछा → निवाड़ी जिले में
→ बेतवा नदी के समीप
→ बुंदेला शासकों सम्बंधी
→ चंद्रशेखर आजाद यहाँ रहे
→ दर्शनीय स्थल → रामलला मंदिर
→ चतुर्भुज मंदिर, हरदौल महल
→ शहीद स्मारक
→ जहाँगीर महल

(7) पचमढ़ी → हिल स्टेशन
→ होशंगाबाद

(8) अमरकंटक → अनूपपुर → हिलस्टेशन

लोक शिल्प (शिल्पकला) के अंतर्गत स्तंभकला, मृद्भांड निर्माण, मूर्तिकला, वस्त्रनिर्माण कला, काष्ठशिल्प एवं अन्य पारंपरिक हस्तकलाएँ आती हैं।

म.प्र. में सौंदर्य की अभिव्यक्ति भावनाएँ, मनोरंजन व जीवनशैली के विकास के अनेक लोकशिल्प कलाएँ विकसित हुईं जो भिन्न-भिन्न अंचलों में विभिन्न समुदायों में प्रचलित हैं। ये निम्नानुसार हैं:

1. मिट्टीशिल्प → मृद्भांड, खिलौने, मूर्तियाँ
   - → मालवा के मृद्भांड → प्रसिद्ध
   - → झाबुआ मंडला में (विशेष)

2. काष्ठ शिल्प → म.प्र. का अग्रणी स्थान
   - → मण्डो → कोरकू → मृतक स्तंभ
   - → भीलों के विवाह प्रसिद्ध
   - → खिलौने

3. कंघी कला → बंजारा जाति प्रसिद्ध
   - → कंघियों पर अलंकरण
   - → उज्जैन, नीमच में अधिक प्रचलन

Scanned with CamScanner

- तीर-धनुष कला → जनजातियों में
  - → भील जनजाति
  - → लकड़ी, लोहा, मोरपंख, रस्सी का उपयोग

- बाँस शिल्प → बाँस से चटाई, टोकरी, बैठने के फर्नीचर निर्मित
  - → झाबुआ, मंडला जिलों की जनजातियों में अधिक प्रचलन

- कठपुतली → लकड़ी, कपड़े से निर्मित व सजावट
  - → नट जाति

- पत्ता शिल्प → झाड़ू, आसन, चटाई का निर्माण
  - → जनजातियों में अधिक

- गुड़िया शिल्प → कपड़ा, कागज, लकड़ी, पत्तों से बनी
  - → झाबुआ की भीली गुड़िया

- साड़ी निर्माण
  - → महेश्वरी साड़ी → खंडवा
    - → रेशमी साड़ी, कढ़ाई
    - → पारंपरिक बुनकरों द्वारा
  - → चंदेरी साड़ी → रेशमी, जड़ीदार

Scanned with CamScanner

- प्रस्तर शिल्प → मेड़ाघाट, ग्वालियर, मंदसौर, रतलाम में अधिक प्रसिद्ध
  → भील, गुजर आदि द्वारा धार्मिक एवं धर्मेत्तर प्रस्तर मूर्तियों का निर्माण

- लाख शिल्प → वृक्ष की गोंद का प्रयोग
  → मूर्तियाँ, चूड़ी आदि का निर्माण
  → उज्जैन, इंदौर, रतलाम जिलों में प्रसिद्ध
  → लखेरा या लखार समुदाय विशेष कुशल इसमें

निष्कर्षतः म.प्र. शिल्पकला में वैविध्य के साथ साथ विशिष्टता भी रखता है, जिसे देश स्तर से लेकर विश्व स्तर पर पहचान दिलाने की जरूरत है। इससे न केवल इससे जुड़े लोगों की आजीविका सुनिश्चित होगी, बल्कि वर्तमान पर्यावरण प्रदूषण सम्बन्धी चुनौतियों का सामना करने में मदद मिलेगी। ये आकर्षक उत्पाद 'ईको फ्रैंडली' और निर्मित करती है।

E

गैर परंपरागत ऊर्जा के स्रोत ऐसे स्रोत हैं, जो निकट भविष्य में न तो समाप्त हो सकते हैं और न ही प्रदूषण फैला सकते हैं। साथ ही इनमें से कुछ ऐसे स्रोत हैं जो किसी उपयोग में लाये जा चुके पदार्थ को भी ऊर्जा में परिवर्तित कर सकते हैं।

मध्यप्रदेश अपरम्परागत ऊर्जा स्त्रोतों की दृष्टि से अग्रणी राज्य है। प्रदेश की कुल विद्युत उत्पादन क्षमता 18660 मेगावाट में से 3502 मेगावाट अपरंपरागत स्रोतों से प्राप्त होती है (आर्थिक सर्वेक्षण - म.प्र. 2018-19 के अनुसार)।

प्रदेश के गैरपरंपरागत ऊर्जा स्रोत निम्नलिखित हैं :

① सौर ऊर्जा — इसके अंतर्गत सूर्य द्वारा फोटोन के रूप उत्सर्जित विकिरण को फोटोवोल्टिक सेल (पैनल) की मदद से विद्युत ऊर्जा प्राप्त की जाती है। साथ ही सोलर कुकर द्वारा भोजन पकाया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

म.प्र. में सौर ऊर्जा के विकास हेतु अनेक परियोजनाएं चलायी जा रही हैं। इंदौर के कस्तूरबा ग्राम को सौर ऊर्जा ग्राम में बदला गया है। रीवा जिले में एशिया का सबसे बड़ा 'रीवा मेगा सोलर पावर प्रोजेक्ट' स्थापित किया गया है।

इसके अलावा →
- → डी.डी.जी. कार्यक्रम
- → सोलर फोटो वोल्टिक पावर प्लांट (ऑफ ग्रिड)
- → सोलर पंप कार्यक्रम (ऑफ ग्रिड)
- → सूर्य मित्र कार्यक्रम

सोलर फोटोवोल्टिक स्ट्रीट लाइट एवं होमलाइट कार्यक्रम ←

② पवन ऊर्जा → म.प्र. प्रथम स्थान पर
- → सर्वाधिक पवन चक्कियाँ → इंदौर में
- → देवास – जामगोदरानी
- → लगभग 350 मेगावाट विद्युत उत्पादन
- पवन चक्की (डायनेमो) → पवन ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में रूपांतरण (यांत्रिक → विद्युत / इलेक्ट्रिक ऊर्जा)

Scanned with CamScanner

सभी प्रश्नों का उत्तर दे
शब्द सीमा का ध्यान रखे

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

(3) सौर ऊर्जा गर्म जल संयंत्र
→ सौर ऊर्जा से पानी गर्म → ऊर्जा प्राप्ति (विद्युत)
→ भोपाल डेयरी में सबसे बड़ा संयंत्र स्थापित
→ अन्य 18 संयंत्र स्थापित

(4) बायोमास ऊर्जा → पौधे / जैविक कचरे → ऊर्जा प्राप्ति

बायोगैस
→ धार में → भूसी से (जदुबेड़ा) → विद्युत ऊर्जा (संयंत्र)
(A) इंदौर, बालाघाट
→ (B) मदमदा पशुपालन विभाग → (भोपाल)
→ बायोगैस प्लांट
→ (C) बैतूल जिले की भैंसदेही तहसील (जैविक कचरे → विद्युत)

बायोडीजल / बायोईंधन (Fuel)
→ म.प्र. में जैट्रोफा द्वारा
→ मंडला जिले में संयंत्र स्थापित

(5) हाइड्रेन जलपंप → खरगोन में सर्वाधिक

इस तरह मध्यप्रदेश में अपरंपरागत ऊर्जा की अनंत संभावनाएँ हैं।